s
Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में गांधीवाद

Dr. Janki Choudhary
Guest Lecturer, Department of Hindi, Govt. D. T. PG College Utai, Durg, Chhattisgarh, India

Corresponding Author: * Dr. Janki Choudhary

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.23885204

सारांश

छत्तीसगढ़ी लोक गीतों में गांधी जी सत्य, अहिंसा, प्रेम, सौहार्द, सहिष्णुता और जन उद्धारक के प्रतीक है। गांधी जी के विचार और देश के प्रति प्रेम, त्याग, समर्पण का भाव ने छत्तीसगढ़ी जनमानस को एक नई दिशा प्रदान किया है। गांधी जी के विचारधारा को जनमानस ने सदैव आत्मसात किया है और साहित्य में भी प्रतिबिंबित किया है। गांधी जी एक महान राजनीतिज्ञ, दार्शनिक थे, उससे पहले वह मानवता के अग्रदूत रहे हैं। समाज में कभी भी स्त्री-पुरुष में मेद न करते हुए दोनों कों समान अवसर व अधिकार देने के हिमायती रहे। खासकर स्त्री वर्ग और दलित वर्ग को समाज में एक नई पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। गांधी जी के अगुवाई में छत्तीसगढ़ में स्वतंत्रता आंदोलन, खादी आंदोलन, मद्रद्यनिषेध आंदोलन का सफल आयोजन भी हुआ। गांधी जी के देश को स्वतंत्र कराने व समाज सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका को छत्तीसगढ़ी लोकगीतकारों ने अपनी रचना में सहज मुखरित करता आया है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 07-08-2026
- **Accepted:** 28-10-2026
- **Published:** 31-10-2026
- **MRR:**4(10); 2026: 273-275
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

Choudhary J. छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में गांधीवाद. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(10):273-275.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

मुख्य शब्द: छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य, छत्तीसगढ़ी लोकगीत, महात्मा गांधी, समाज सुधार आंदोलन।

© 2026 Dr. Janki Choudhary. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना:

छत्तीसगढ़ी एक समृद्ध बोली व भाषा है। इसमें छत्तीसगढ़ के साधारण जन मानस का साहित्य मौखिक व लिखित रूप से प्रचूर मात्रा में उपलब्ध होते है। छत्तीसगढ़ के नैसर्गिक वैभव की भांति इसका लोकसाहित्य भी अत्यंत समृद्ध और हृदयग्राही है। लोगों की उदार मनोवृति और उनके आदर्शों की छाप सांस्कृतिक जीवन में परिलक्षित होती है।

छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य में गीतों की प्रधानता है। अधिकांश लोकगीत सामाजिक व्यवस्था की उपज होती है। ग्राम्य परिवेश में जन्म से मृत्यु तक विभिन्न संस्कार, पों, ऋतुओं और श्रमपरिहार के अवसर पर कलकंठ से गीत बरबस फूट पड़ते है। वहीं देश में घटनेवाले घटनाओं और देश के महापुरुषों के जीवनी को भी गीतकारों ने अपने गीतों के माला में पिरोया है।

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में श्रृगांर, करूण गीतों के अलावा देशभावना से प्रेरित गीतों की बाहूल्य हैं। पुरुष और नारियों द्वारा गाये जाने वाले विविध गीतों में समसामयिक घटनाओं तथा उसका यथार्थ चित्रण की बानगी देखने को मिलती है।

छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य में गांधी जी के जीवन का प्रत्येक पक्ष प्रतिबिंबित होता है। साहित्यकारों ने भारत की स्वाधीनता तथा उसके उद्‌गार के चित्र संजोए है। छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में युग की घटनाओं को निकट से सुना जा सकता है। लोकगीतों में गांधीवादी विचारधारा के दर्शन सहज मिलते है।

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में गांधी जी को "बबा" के नाम से जाना जाता है। तथा देश-प्रेम, व त्याग के कारण वह देवतुल्य माने गये है। गांधी जी का आविर्भाव ऐसे समय में हुआ था। जब हमारा देश विकट स्थिति में पहुँच चुका था। अंग्रेज हमारे देश के अन्न-धन लूट रहे थे। भारतीयों में फूट डालकर राज कर रहे थे, भारतीय लोग आपस में लड़-झगड़ रहे थे। इस समय गांधी जी का आविर्भाव एक देवता के रूप में हुआ जो भारतीयों की आंखे खोल कर अंग्रेजी शासन की भेद नीति के रहस्य को प्रकट किया।

देवता बन के आये गांधी, देवता बन के आये।
हमरे देश के अन ला धन ला, जम्मा जम्मों लूटिन।
परदेशियन के लड़वाए ले, भाई ले भाई छूटिन।।
देश ला करके निचट निहत्था, उल्टा मोरै शेखी।
बोहे गुलामी करत रहे न हम, उंकरे देखा-देखी ।।
तै आंखी ला हमार अघारे, जम्मों पोल बताए।
गांधी देवता बनके आए ।।

अंग्रेजी शासन काल में पूरा देश कंगाल हो चुका था। बढ़ती मंहगाई से अनाज के दाम बेतहाशा बढ़ गये। वस्त्रों के दाम ऐसे बढ़ गये थे कि लोग अर्धनग्न रहने लगे। भूख और अकाल में लोगों का पेट छटपटा उठता था। ऐसे में स्थानीय रूप से मिलने वाले कंद-मूल भी नहीं मिल पा रहे थे। लोग खाने के लिए चावल खरीदने में असमर्थ हो गये थे। हल्बी गीतों में इसकी एक झलक देखिए..

ए मांहाग चाउर, मांहाग फटई, एक पाहरिया राधा रे, एक पाहरिया राधा।
भूख अकाल ने छटपट, जंगल कंड़वा राधा ।।
अंग्रेज राज कंगाल होती, गोटक रूपिया चाउर सोली।

फिरंगियों के आगमन से देश आर्थिक विपन्नता से घिर गया। लोगों को निकृष्ट भोजन ही उपलब्ध हो रहे थे। छत्तीसगढ़ी के ददरिया गीतों में भी आर्थिक विपन्नता की झलक मिलती है जो इस प्रकार है :-

तिवरा के दार मा बनायेव भाजी।
फिरंगी होगे राजा, नंदागे खाजी।।

इस भयावह विषम परिस्थिति में गांधी जी ने देशवासियों को उबारने में सार्थक प्रयास किया। गांधी जी अपने विलायती बाने को त्याग कर देशवासियों के संबल बने।

तै भारत के भाग ला फेरे, अपन के साहिबी बाना फेरे, गांधी देवता।
घर-घर दुख दरिद के मारे, निचट घुनागे रिहिस गा देवता-गांधी देवता।

भारत का स्वतंत्रता आंदोलन अहिन्सक और शांतिवादी होने के कारण विश्व इतिहास में सम्मानजनक स्थान पाया है। आंदोलन का आरंभ तो सैनिकों के विद्रोह से हुआ। वैसे छत्तीसगढ़ में स्वाधीनता संग्राम का प्रारंभ 1857 में हुआ, जनमानस में उस समय गुलामी के प्रति आक्रोश तो था लेकिन यह एक आंदोलन का रूप नहीं लिया था। आजादी की लड़ाई का नेतृत्व जब महात्मागांधी ने सम्भाला तब आंदोलन की आँच देश के कोने-कोने तक फैल गई और उनके अहिंसावादी आंदोलन का प्रतीक "चरखां" बन गया।

चरखा चलाबों संगी, चरखा चलाबों।
गांधी बबा के कहे मां ।।

किसी आंदोलन की सच्ची शक्ति जनता में निहित होती है। गांधी जी के आह्वान पर आंदोलन में सभी वर्गों श्रमिक-कृषक, साक्षर-निरक्षर की सहभागिता है। पहली बार महिलाओं की भागीदारी अधिक संख्याओं में स्वतंत्रता आंदोलन में भी देखी गई।

रदबद चांटी रेंगे चाटी के नाव,
रदबद रदबद चांटी रेंगे, चांटी के नाव दुरगासी।
सास बहू तो पानी जावें, ननद मांगे बाती,
हाजिर रहिहो ग, राजी रहिहो ग, गांधी के लड़ाई म हाजिर रहिहो गा।।

लंदन में हुए गोलमेज सम्मेलन की विफलता से गांधी जी आक्रोशित हुए थे। भारतीय शासन एवं ब्रिटिश शासन से उनकी उम्मीद टूटती जा रही थी। तब महात्मागांधी ने कहा था "इस सरकार से हम कोई उम्मीद नहीं कर सकते, यह सरकार हमें कुछ नहीं देगी। अपनी आजादी पाने के लिए हमें लाठी नहीं गोली खाने और लाखों के बलिदान करने की तैयारी करनी पड़ेगी।" वहीं दूसरी ओर सम्मेलन की विफलता के बाद अंग्रेजी शासन का दमन चक्र तीव्र हो गया। सन् 1932 में बड़े पैमाने पर बड़े नेताओं सहित अधिक संख्या में लोगों की गिरफ्तारी की गई। गांधी जी और अन्य नेता भी जेल में डाल दिये गये थे। इस संदर्भ में उक्त पंक्तियाँ द्रष्टव्य है :-

गांधी नेहरू, जेलन में बैठे, हमर जिनगी ला धिक्कार है।
देश के आजादी जब होइही. तभे मनाबों तिहार ।।

जेल में कैद गांधी जी यातना सह रहे थे। किन्तु अपने दृढ़ निश्चिय पर अडिग रहे।

दिया मांगे बाती, बाती मांगे तेल।
सुराज लेबो अंगरेज, कतेक देबे जेल ।।

स्वतंत्रता आंदोलन में गांधी जी का सत्य, अहिंसा व सत्याग्रह का हथियार कारगर सिद्ध हुआ। उनके माध्यम से देश को आजादी मिली।

© 2026 Dr. Janki Choudhary. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

पूरा देश गांधी जी के सार्थक प्रयास से मिले सफलता से हर्ष और उल्लास से झूम उठा। सुवागीत में उसकी झलक दिखलाई पड़ती है :-

चला दीदी देखे, जाबो झंडा तिरंगा ला।
रे सुअना पाय हे देश सुराज।
उड़ि जा रे सुअना, तै दिल्ली शहर मा।
रे सुवना गांव-गांव मा झंडा फहराय।।
रे सुअना कौन चलावथय राज।
गांधी देवाय मोर देश सुराज ।।
रे सुअना, जवाहिर, चलावथय राज।

देश को आजादी दिलाने के कारंण कृतज्ञ राष्ट्र गांधी जी का शत्-शत् अभिनंदन करता है। तिरंगे को प्रणाम कर और गांधी जी के पवित्र चरणों को पखार कर छत्तीसगढ़ गौरवान्वित महसूस करता है। इस गीत में यह द्रष्टव्य है:-

आवव सुराजी बबा, गोड़ धोवव तोर,
पावं परव तिरंगा के, मान करव तोर।
अंधयारी पारख में अंजोरे अंजोरे हे,
नई भुलावव |

गांधी जी सदैव स्वदेशी वस्तुओं के पक्षधर भी रहे हैं। भारतीय मानवता की एकता तथा उसकी आर्थिक स्वतंत्रता और समानता के प्रतीक जिस खादी के उपयोग पर बल दिया, वह शीघ्र ही साधारण जनमानस किन्तु स्वालंबन प्रिय जनता में लोकप्रिय हो गई।

नानमुन छोकरा पहिरे ला पागी।
बबा के कहे पहिरबो खादी ।।

वास्तव में गांधी जी ने भारतीय अर्थव्यवस्था का ब्रिटेन द्वारा किये शोषण का प्रतिकार स्वरूप् खादी आंदोलन की मुहिम चलाई। जिसमें स्वदेशी वस्तुओं को लोकप्रिय बनाने तथा भारतीय कला तथा उद्योगों का विकास करना था। और देश की बढ़ती हुई गरीबी से बचाना था। गांधी जी का खादी आंदोलन का बढ़ता हुआ प्रभाव व्यापक पूरे देश में फैल चुका था, गांधी जी के निर्देशन में जन मानस इस आंदोलन का हिस्सा बन गये।

चला सबो मिलके गीत गा, चरख कातबो।
गांधी हर हमला सिखोईस हे ना।।

गांधी जी जब अंग्रेजों के विरूद्ध सत्याग्रह शुरू किया, तो साथ ही नशाबंदी (शराब, जुआ) के खिलाफ पूरे देश में मुहीम चलाई। गांधी जी का मानना था कि "नशा (शराब) आत्मा और शरीर दोनों को नाश करती है।" इससे अनेक घर जल कर राख हो जाते है। इस आंदोलन का शुभारंभ 100 साल पूर्व चंपारण में किया था। कहा जाता है कि देश इस समय नशे का शिकार था। गांधी जी ने "बड़हड़वा लखन सेन" गांव में एक बांस का खम्भा गड़वाया और लोगों से अपील करते हुए नशा छोड़ने का आग्रह किया था। कई लोग उस खम्भे पर नशीला पदार्थ और शराब की बोतल को टांग कर नशा से तौबा कर ली और जो नहीं माने वह नशे से नाश हो गये। गांधी जी के मद्यपान निषेध की बानगी छत्तीसगढ़ लोकगीतों में दिखती है :-

"गांधी बाबा बल्लो सुना हो गांवरेया, मंद के छोड़ा तुमी।
नगत गोठ के धरा हो गंवरेया, मंद के छोड़ा तुमी"
करेजा फोफसा जरून जाएसे, रेहे के चटपट चरून खएसे,
धन सरेसे धरम जाएसे, मंद के छोड़ा तुमी ।।
मंद चो जोर ने धरा-धरा, मंद चो जोर ने मारा-मारी,
मंद चेघाए से तुमके कछेरी, मंद के छोड़ा तमी।
गांव चो झगड़ा गाए टूटे, कछेरी जातोर तुमचो छुटो.
उकील मन चो संगत छूटो, मंद के छोड़ा तुमी।।

उपसंहार

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में गांधी जी की लोकभावना की अभिव्यंजना बहुत ही मार्मिक है। लोक जीवन में गांधी जी का आदर्श जादू की तरह छाया हुआ है। उनके बताये पथ पर चलकर लोग शांतिपूर्वक व प्रेम भाईचारे से जीवन व्यतीत कर रहे है। जाति-पाँति, धर्म, सम्प्रदाय व अश्पृश्यता को पनपने नहीं देता। गांधीवादी धारणा लोगों में अहिंसा, सत्य प्रेम तथा निश्छलता की भावना का संचार करता है और उन्हें महान बनाता है।

संदर्भ

1. शुक्ल दयाशंकर. छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य का अध्ययन. रायपुर: वैभव प्रकाशन; 2001.
2. कसार जमुना प्रसाद. झाँपी: छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक मंजूषा.
3. शुक्ला शिवशंकर. तरसत हे चोला: छत्तीसगढ़ का ददरिया. रायपुर: वैभव प्रकाशन; 2016.
4. अड़िल सत्यभामा. छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य. रायपुर: वैभव प्रकाशन; 2002.
5. पालीवाल आरके. गांधी: जीवन और विचार.
6. दुबे अमृत लाल. तुलसी के बिरवा जगाय.
7. बिहनिया. संस्कृति विभाग, छत्तीसगढ़. दशम अंक. नवंबर 2012.
8. यादव सोमनाथ. छत्तीसगढ़ के बाँसगीत. नागपुर: जे.पी. गुप्ता.
9. सक्सेना सुधीर. छत्तीसगढ़ में गांधी. रायपुर: शताक्षी प्रकाशन; 2006.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the Corresponding Author



Dr. Janki Choudhary is a Guest Lecturer in the Department of Hindi at Government D. T. PG College, Utai, Durg, Chhattisgarh, India. Her academic interests include Hindi literature, language studies, literary criticism, and cultural research. She is committed to teaching, promoting literary understanding, and contributing to academic scholarship in Hindi.

© 2026 Dr. Janki Choudhary. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/